

डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 16, दिव्य अवतार और त्रिदेव

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए अपने व्याख्यान हैं। यह सत्र 16 है, दिव्य अवतार और त्रिदेव।

ठीक है, हम इस श्रृंखला का समापन कुछ ऐसे सिद्धांतों के बारे में बात करके करेंगे जो ईसाई धर्म के लिए केंद्रीय हैं: दिव्य अवतार और त्रिदेव।

हम ऐसा इसलिए करने जा रहे हैं क्योंकि इन सिद्धांतों के संदर्भ में कुछ बहुत ही दिलचस्प दार्शनिक प्रश्न उठते हैं। और ये सिद्धांत ईसाई धर्मशास्त्र के लिए केंद्रीय हैं। इसलिए, हम ईसाइयों को इन मुद्दों को कठोर और दार्शनिक रूप से सूचित तरीके से संबोधित करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

तो, आइए देखें कि इन सिद्धांतों से किस तरह की दार्शनिक समस्याएं जुड़ी हैं और हम उनसे कैसे निपट सकते हैं। ईश्वरीय अवतार के बारे में रूढ़िवादी ईसाई दृष्टिकोण यह है कि यीशु मसीह दोहरे स्वभाव वाले हैं लेकिन एक व्यक्ति हैं। वह पूरी तरह से मानव और पूरी तरह से ईश्वर दोनों हैं, जो तुरंत सवाल उठाता है, यह तार्किक रूप से कैसे सुसंगत हो सकता है? कोई व्यक्ति ईश्वर-मनुष्य होते हुए भी वास्तव में ईश्वरीय कैसे रह सकता है जबकि वह वास्तव में मानव भी है? यह वास्तव में एक समस्या है जिसने इस पर काम करने की कोशिश कर रहे प्रारंभिक चर्च को परेशान किया।

कुछ आरंभिक चर्च धर्मशास्त्रियों ने ऐसे सिद्धांत विकसित करने का प्रयास किया जो इसे तर्कसंगत रूप से सुसंगत तरीके से समझा सकें, जिसके कारण कई विधर्म उभर कर सामने आए। सबसे पहले, आइए विरोधाभासों, विरोधाभासों और रहस्यों के बीच तीन गुना अंतर पर ध्यान दें। विरोधाभास तब होता है जब कोई व्यक्ति बिल्कुल एक ही प्रस्ताव की पुष्टि और खंडन करता है।

जबकि विरोधाभास एक स्पष्ट लेकिन वास्तविक विरोधाभास नहीं है, कुछ ऐसा जो विरोधाभास जैसा दिखता है लेकिन ऐसा नहीं है। रहस्य एक ऐसा सत्य है जिसे मानवीय तर्क द्वारा नहीं समझा जा सकता है, जो विरोधाभासी हो भी सकता है और नहीं भी। इसलिए, जब दिव्य अवतार के सिद्धांत की बात आती है, तो थॉमस मॉरिस ने इनमें से कुछ समस्याओं से निपटने में जबरदस्त काम किया है।

उन्होंने करीब 30 साल पहले एक किताब लिखी थी जिसका नाम था द लॉजिक ऑफ गॉड इन्कार्नेट, यह बहुत बढ़िया है, इस विषय पर मैंने अब तक जो भी पढ़ा है, उसमें यह सबसे बढ़िया है। थॉमस मॉरिस फॉर्च्यून 500 कंपनियों के लिए एक प्रेरक वक्ता बन गए, खास तौर पर

नैतिकता के क्षेत्र में। और उन्होंने वहां कुछ बहुत बढ़िया काम किया है; उन्होंने एक किताब लिखी जिसका नाम था इफ अरस्तू रान जनरल मोटर्स, जो बहुत बढ़िया है।

लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने उस समय कंपनियों को व्यावसायिक नैतिकता के बारे में व्याख्यान देना शुरू किया था, और वे इतने लोकप्रिय हुए, और उन्हें इतनी तनख्वाह मिलनी शुरू हो गई कि उन्हें अब अपने शिक्षण पद की आवश्यकता नहीं रही। लेकिन इन सबके अलावा, वे धर्म के एक जबरदस्त दार्शनिक हैं। तो, यहाँ सार के दो अर्थों के बीच एक अंतर है, और सार, आम तौर पर वह समझा जाता है जिसके बिना कोई चीज़ वह नहीं होती जो वह है।

लेकिन सार के दो अर्थ हैं जिन्हें यहाँ पर अलग-अलग पहचाना जा सकता है। एक है व्यक्तिगत सार जो कि एक तरह के सार के विपरीत है। एक व्यक्तिगत सार को उन सभी गुणों द्वारा परिभाषित किया जाता है जो किसी विशेष चीज़ के पास होते हैं।

आपका व्यक्तिगत सार उन सभी गुणों से बना है जो आपके पास हैं। यही आपको आप बनाता है। आपके बारे में ये सभी तथ्य आपको एक खास चीज़ या एक खास व्यक्ति बनाते हैं।

एक दयालु सार के विपरीत, जिसे किसी व्यक्ति के किसी वर्ग या प्रकार का सदस्य होने के लिए व्यक्तिगत रूप से आवश्यक और संयुक्त रूप से पर्याप्त सभी गुणों द्वारा परिभाषित किया जाता है, इसलिए आप केवल एक अद्वितीय व्यक्तिगत सार वाला कोई विशेष व्यक्ति नहीं हैं। एक इंसान के रूप में आपके पास एक दयालु सार भी है।

आपमें वे सभी गुण और विशेषताएं मौजूद हैं जो व्यक्तिगत रूप से आवश्यक हैं और संयुक्त रूप से आपके मानव जाति का सदस्य होने के लिए पर्याप्त हैं। आप स्तनधारी प्रजाति के भी सदस्य हैं। आपके पास फेफड़े हैं।

आप एक ऐसी इकाई हैं जो जीवित बच्चों को जन्म देती है। या अगर आप पुरुष हैं, तो आप किसी ऐसे व्यक्ति को गर्भवती करने में सक्षम हैं जो जीवित बच्चों को जन्म देता है। आपके पास बाल हैं।

आपके हाथ और पैर के नाखून हैं। आप एक कशेरुकी प्राणी हैं। स्तनधारी होने के लिए आपके पास ये सभी गुण होने चाहिए, और अगर आपके पास ये सभी गुण हैं, तो यह गारंटी है कि आप स्तनधारी हैं।

तो, आप स्तनधारी प्रजाति के सदस्य हैं। और हम सभी तरह के अन्य वर्गों और प्रकारों के बारे में बात कर सकते हैं जिनके हम मनुष्य सदस्य हैं। इसका हमेशा कुछ शर्तों को पूरा करने और कुछ खास गुणों को रखने से संबंध होता है।

व्यक्तिगत सार और दयालु सार। यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंतर है। अब, यह दिव्य अवतार से कैसे संबंधित है? यह कहना कि यीशु मसीह दो स्वभावों वाला एक व्यक्ति था, बस यह कहना है कि उसका व्यक्तिगत सार, एक विशेष व्यक्ति के रूप में उसका अद्वितीय सार, पूरी तरह से मानव-प्रकार के सार और पूरी तरह से दिव्य प्रकार के सार के सभी गुणों से बना था।

तो, मनुष्य होने के लिए जो भी आवश्यक है, जो भी आवश्यक शर्तें हैं, जिसमें मानव शरीर होना, मानव आत्मा होना, मानव मन होना शामिल है, यीशु के पास वे सभी गुण थे, और जो कुछ भी दिव्य होने के लिए आवश्यक है, यीशु के पास वे सभी गुण भी थे। वह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ, सर्व-दयालु, इत्यादि था। और इसलिए, उसका व्यक्तिगत सार सभी आवश्यक दिव्य और मानवीय गुणों से बना था।

यही विचार है। मेरा ग्राफ़िक बहुत परिष्कृत नहीं है, लेकिन आप विचार समझ गए होंगे। इसलिए, जब दिव्य अवतार के बारे में सोचा जाता है, तो व्यक्तिगत और दयालु सार के बीच का अंतर काम आता है।

बस यह स्पष्ट करने के लिए कि हम यहाँ किस बारे में बात कर रहे हैं। लेकिन यह एक आपत्ति उठाता है। क्या यीशु में कुछ ऐसे गुण नहीं हैं जो मानव होने के लिए आवश्यक हैं? सही? उनका गर्भाधान किसी मानव पिता द्वारा नहीं हुआ था।

मुझे कोई ऐसा इंसान दिखाओ जिसका गर्भाधान किसी दूसरे इंसान के पिता से न हुआ हो। खैर, यह हमें एक और अंतर की ओर ले जाता है, और वह है सामान्य गुण और आवश्यक गुण। सामान्य गुण वे विशेषताएँ हैं जो किसी वर्ग या किस्म के कई या ज़्यादातर सदस्यों में होती हैं, जो किसी आवश्यक गुण के विपरीत होती हैं।

आवश्यक गुण वे विशेषताएँ हैं जो किसी वस्तु में किसी वर्ग या प्रकार का सदस्य होने के लिए होनी चाहिए। इसलिए मेरे पास दो हाथ हैं। ज़्यादातर लोगों के पास दो हाथ होते हैं।

यह मनुष्यों के लिए एक सामान्य गुण है। कुछ लोगों के पास केवल एक हाथ होता है। कुछ लोगों के पास कोई हाथ ही नहीं होता।

लेकिन वे फिर भी इंसान हैं। उनमें सिर्फ़ यह असामान्य विशेषता है कि उनके दो हाथ नहीं होते। लेकिन इंसान होने के लिए आपके पास दिमाग होना चाहिए, चाहे वह कितना भी विकसित क्यों न हो।

आपके पास दिमाग होना चाहिए। यह एक आवश्यक गुण है। इसलिए, सभी सामान्य गुण आवश्यक गुण नहीं होते।

इसलिए, जब यीशु की बात आती है, तो उसके पास एक मानव पिता द्वारा गर्भ धारण करने की सामान्य लेकिन गैर-आवश्यक विशेषता का अभाव था। सही? सिर्फ़ इसलिए कि सभी या लगभग सभी मनुष्यों में एक निश्चित विशेषता होती है, इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक आवश्यक विशेषता है। यह भी मामला है कि लगभग हर इंसान के पेट पर या नाभि पर निशान होता है, जो इतना आम है कि हम अपनी नाभि के निशानों को निशान के रूप में भी नहीं सोचते हैं।

अगर आपने कभी किसी व्यक्ति का पेट देखा है, तो आप जानते हैं, एक दुर्लभ मामले में जहाँ उनके पास नाभि नहीं है। मैंने ऐसे उदाहरणों के बारे में सुना है क्योंकि उनकी गर्भनाल, जब किसी कारण से हटा दी गई थी, तो इतनी अच्छी तरह से ठीक हो गई थी कि उनके पास वास्तव में

नाभि नहीं थी। यह लोगों को, आप जानते हैं, अजीब या परेशान करने वाला लगता है, भले ही तथ्य यह है कि वे हम में से बाकी लोगों की तुलना में बेहतर तरीके से ठीक हो गए हैं।

उनमें निशान कम होते हैं। वैसे भी, ज़्यादातर लोगों में नाभि और नाभि होती है, लेकिन यह एक आम गुण है। यह ज़रूरी नहीं है।

यदि आपके पास एक नहीं है, तो यह आपको एक इंसान के रूप में अयोग्य नहीं ठहराता है। और इसलिए, यह यीशु के साथ भी ऐसा ही है कि उनका गर्भाधान किसी मानव पिता द्वारा नहीं हुआ था। यह असामान्य है, लेकिन यह उन्हें एक वास्तविक इंसान के रूप में अयोग्य नहीं ठहराता है क्योंकि किसी भी मामले में मानव होने के लिए मानव पिता द्वारा गर्भाधान होना आवश्यक नहीं है।

पहले दो मानव, आदम और हव्वा, अगर आप मान लें कि वे ऐतिहासिक हैं, आप जानते हैं, वास्तविक ऐतिहासिक लोग हैं, तो उनके पास मानव पिता नहीं था। और मुझे लगता है कि उनमें से किसी की भी नाभि नहीं थी। इसलिए, कुछ पहले मानव प्राणी होने जा रहे हैं, चाहे वे कोई भी हों, और, आप जानते हैं, उनके पास यह असामान्य लेकिन गैर-आवश्यक गुण होगा कि वे किसी मानव पिता द्वारा गर्भाधान नहीं किए गए थे।

हालाँकि, यहाँ एक और आपत्ति है। यीशु वास्तव में इंसान कैसे हो सकते हैं, जबकि उनमें स्पष्ट रूप से दैवीय गुण थे? आप जानते हैं, वह पानी पर चल सकते हैं। वह लोगों के मन की बात पढ़ सकते हैं।

वह जब चाहे लोगों को ठीक कर सकता है। यह हमें तीसरे अंतर की ओर ले जाता है, वह है केवल मनुष्य होने और पूर्ण मनुष्य होने के बीच। पूर्ण मनुष्य होने के लिए, किसी को केवल मनुष्य होने की आवश्यकता नहीं है।

किसी व्यक्ति में केवल वे सभी गुण होने चाहिए जो मानवजाति के सार के लिए आवश्यक हैं। यीशु में सभी आवश्यक मानवीय गुण मौजूद थे, इसलिए वह पूरी तरह से मनुष्य था। लेकिन चूँकि उसके पास दैवीय गुण भी थे, इसलिए वह केवल मनुष्य नहीं था।

पूरी तरह से मानव होने के लिए आपको केवल मानव होने की आवश्यकता नहीं है। यीशु मानव थे, साथ ही मानव भी थे। मानव और अनंत, जैसा कि यह पता चला क्योंकि वे मानव और दिव्य भी थे।

इसलिए, जब तक आवश्यक मानवीय गुणों और दैवीय गुणों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है, तब तक आपको यहाँ कोई समस्या नहीं है। मुझे लगता है कि आलोचक वहाँ संभावित विरोधाभासों की तलाश कर सकते हैं, लेकिन किसी ने भी निश्चित रूप से नहीं दिखाया है कि यीशु के मानवीय स्वभाव और उनके दैवीय स्वभाव के बीच किसी तरह का विरोधाभास है। तो वैसे भी, वह पूरी तरह से मानव है, लेकिन वह मानव और दैवीय दोनों है।

वह मनुष्य से कहीं बढ़कर है। लेकिन यीशु के इस कथन के बारे में क्या कहा जाए कि वह कुछ बातें नहीं जानता था जो परमेश्वर पिता जानता है? खास तौर पर, उसके लौटने का समय। मत्ती 24 में यह एक बहुत ही पेचीदा अंश है।

क्या यह समस्याजनक नहीं है? मॉरिस इस समस्या के संबंध में कुछ रणनीतियों पर चर्चा करते हैं। एक है केनोटिसिस्ट दृष्टिकोण जो फिलिप्पियों 2 के आधार पर कहता है कि खुद को खाली करने में, यीशु ने अपने कुछ दिव्य गुणों को त्याग दिया, जिसमें उनकी सर्वज्ञता भी शामिल है। यह बताता है कि वह अपनी वापसी का समय क्यों नहीं जानता।

लेकिन ऐसा लगता है कि उसने अपनी दिव्यता त्याग दी है। यदि आप यीशु की सर्वज्ञता को नकारते हैं, तो ऐसा लगता है कि आप उनके दिव्य होने को नकार रहे हैं। दूसरा दृष्टिकोण जो बेहतर हो सकता है वह है दो-दिमाग वाला दृष्टिकोण।

इसमें कहा गया है कि यीशु के दो दिमाग थे जो एक दूसरे से विषम संबंध रखते हैं, जहाँ एक दिमाग सर्वज्ञता से दूसरे तक पहुँच सकता है, लेकिन इसके विपरीत नहीं। यह वह दृष्टिकोण है जिसके पक्ष में मॉरिस हैं। वह चेतन और अचेतन दिमाग और कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का सादृश्य बनाता है, जहाँ प्रत्येक मामले में, एक के पास दूसरे तक पहुँच होती है, लेकिन दूसरे के पास दूसरे तक पहुँच नहीं होती है।

शायद यही हो रहा है। यहाँ समस्या यह है कि यदि यीशु के पास सचमुच दो मन थे, तो उसे एक व्यक्ति कैसे कहा जा सकता है? मुझे नहीं पता कि इसका क्या समाधान है, मैथ्यू 24 में प्रस्तुत दार्शनिक पहेली। यह हो सकता है कि यह यीशु के चुनाव का मामला हो कि वह अपने लौटने के बारे में पिता के पास मौजूद जानकारी तक न पहुँचे।

शायद कोई और सिद्धांत हो जो कारगर हो। लेकिन यह सब कहने का मतलब यह है कि भले ही हम कुछ आपत्तियों को दूर कर सकते हैं और दिव्य अवतार के सिद्धांत की कुछ आलोचनाओं को खारिज कर सकते हैं जो दावा करती हैं कि यह असंगत है, फिर भी कुछ समस्याएं हैं, कुछ मुद्दे अभी भी हैं जो कुछ बाइबिल ग्रंथों के प्रकाश में उठते हैं जो इसे कुछ हद तक रहस्यमय बनाते हैं। इसलिए, मैं कहूंगा कि उस सिद्धांत का दिव्य अवतार कम से कम एक रहस्य है, अगर विरोधाभास भी नहीं है, लेकिन विरोधाभास नहीं है।

तो, चलिए अब त्रिएकता के सिद्धांत पर चलते हैं। ईश्वर के बारे में रूढ़िवादी ईसाई सिद्धांत यह दावा करता है कि वह त्रिएक है। यह कई अलग-अलग अंशों से अनुमान लगाया जाता है जो पिता और पुत्र, पवित्र आत्मा को ईश्वर के रूप में संदर्भित करते हैं।

सिर्फ एक या दो अंश जो तीनों का ज़िक्र करते हैं। शायद मत्ती 28 में महान आदेश, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर उन्हें बपतिस्मा देना। हालाँकि यीशु स्पष्ट रूप से उस सिद्धांत को सिखाने और विकसित करने का लक्ष्य नहीं रखते हैं, फिर भी यह तथ्य कि वे महान आदेश में उस संदर्भ को बताते हैं, इस दिशा में एक बहुत शक्तिशाली संकेत है।

उन्हें कई अन्य अंश मिले। पुराने नियम में वापस जाकर, हिब्रू शब्द एलोहिम का उपयोग एक तरह से बहुवचन अर्थ रखता है, और अन्य अंश व्यक्तिगत रूप से पवित्र आत्मा, पिता और पुत्र को दिव्य के रूप में संदर्भित करते हैं। लेकिन दार्शनिक दृष्टिकोण से, हम इसे लगातार कैसे समझ सकते हैं? ईश्वर तीन और एक दोनों कैसे हो सकता है? क्या यह एक स्पष्ट विरोधाभास नहीं है? खैर, शुरुआत में यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि त्रिएकत्व का सिद्धांत यह दावा नहीं करता है कि ईश्वर एक ही अर्थ में तीन और एक है।

एक अर्थ में वह एक है, और दूसरे अर्थ में वह तीन है। ईश्वर तीन व्यक्तियों में एक सत्ता या पदार्थ या सार है। इसलिए, हमारे मुस्लिम मित्रों का यह दावा कि ईसाई बहुदेववादी हैं, गलत है।

वे इस सरल लेकिन महत्वपूर्ण अंतर को अनदेखा करते हैं कि ईश्वर एक है, एक अस्तित्व के अर्थ में। वह एक अस्तित्व है लेकिन तीन व्यक्ति हैं। हालाँकि, यहाँ एक समस्या है।

यदि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, तो वह परमेश्वर के साथ एक कैसे हो सकता है, क्योंकि परमेश्वर ने उसे बनाया है? उत्तर: यीशु को बनाया नहीं गया था। वह एक तरह से पैदा हुआ था जो कि हम मानवीय अनुभव से जानते हैं, और वह है, जैसे मनुष्य प्रजनन के माध्यम से बच्चे पैदा करते हैं, मेरे चार बच्चे हैं। मैंने उनमें से किसी को भी नहीं बनाया।

मैं प्रजनन में शामिल था। वे मेरी पत्नी और मेरे मिलन के माध्यम से पैदा हुए थे, बनाए नहीं गए थे। इसने इस मानव जाति के सार को कायम रखने की गारंटी दी, जो दिलचस्प रूप से, मुझे लगता है, वास्तव में दिव्य त्रिमूर्ति के समानांतर है।

जैसे पुत्र मिलन से आगे बढ़ता है, मुझे खेद है, यह पवित्र आत्मा पिता और पुत्र के मिलन से आगे बढ़ता है, और आपके पास एक तीसरा व्यक्ति है जो कम दिव्य नहीं है। भले ही वह पिता और पुत्र से आगे बढ़ता है, और पुत्र भी कम दिव्य नहीं है, हालाँकि वह परमेश्वर पिता से आगे बढ़ता और उत्पन्न होता है। तो, यहाँ कुछ विधर्मी अतिवाद हैं जिनसे हमें बचना चाहिए।

एक है मोडलिज्म, यह दृष्टिकोण कि त्रिदेव का प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर का एक अलग स्वरूप या अभिव्यक्ति है। यहाँ समस्या यह है कि यह ईश्वरीय व्यक्तित्व की वास्तविक बहुलता को नहीं दर्शाता है जिसका संकेत शास्त्रों में दिया गया है।

पेंटेकोस्टलिज्म के कुछ ब्रांड हैं जहाँ इस दृष्टिकोण को अपनाया जाता है, मोडलिज्म के संस्करण। एक और विधर्मी चरमपंथ त्रिदेववाद है, यह विचार कि त्रिदेव का प्रत्येक व्यक्ति एक अलग प्राणी है। यहाँ समस्या यह है कि यह केवल बहुदेववाद है, जो बाइबल के अनुसार नहीं है।

इसलिए, हमें एकता को छोड़कर बहुलता पर जोर देने या बहुलता को छोड़कर एकता पर जोर देने से बचना चाहिए। रूढ़िवादी दृष्टिकोण उन चरम सीमाओं के बीच एक तरह का मध्य है। अब, यहाँ एक महत्वपूर्ण और सहायक भेद है जो दार्शनिक भेद है जो यहाँ सहायक हो सकता है, जो पहचान के है और भविष्यवाणी के है के बीच के अंतर से संबंधित है।

पहचान के लिए 'is' का इस्तेमाल एक और एक ही होने के अर्थ में किया जाता है। इसलिए, अगर मैं कहता हूँ कि जोकास्टा ओडिपस की माँ है, तो मेरा मतलब यह है कि वे एक और एक ही व्यक्ति हैं। ओडिपस को तब निराशा होती है जब उसे पता चलता है कि, बहुत देर हो चुकी है, वह वास्तव में अपनी माँ से विवाहित है।

यह कितना भयावह अहसास है। हालांकि, यह जितना भयावह है, मुझे कभी समझ नहीं आया कि वह अपने सिर से अपनी आंखें क्यों निकालता है। जब आप किसी बात से परेशान होते हैं तो अपनी आंखें क्यों निकाल लेते हैं? मुझे लगता है कि इसमें कुछ सांस्कृतिक अंतर हो सकते हैं।

निश्चित रूप से, यह एक दुखद परिणाम है। पहचान के अर्थ में इसका इस्तेमाल किया जाता है। जब हम यह कहना चाहते हैं कि कोई चीज़ किसी चीज़ के समान ही है।

फिर, पूर्वसर्ग का 'है' अलग है। यहाँ, हम 'है' शब्द का प्रयोग कुछ विशेषताओं के अर्थ में करते हैं। इसलिए, अगर मैं कहता हूँ कि जोकास्टा गोरी है, तो मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि वह गोरेपन के साथ एक ही है।

मैं कह रहा हूँ कि उसके पास सुनहरे बालों की विशेषता है। यह कैसे मददगार है? त्रिदेव का सिद्धांत यह दावा करता है कि पिता ईश्वर है, पुत्र ईश्वर है, और आत्मा ईश्वर है। यानी, इस शब्द का इस्तेमाल पहचान के बजाय पूर्वानुमेयता के अर्थ में किया जाना चाहिए।

परमेश्वर में सिर्फ पिता से भी बढ़कर कुछ है। परमेश्वर में सिर्फ पुत्र से भी बढ़कर कुछ है, सिर्फ आत्मा से भी बढ़कर कुछ है। वह पिता, पुत्र और आत्मा है।

त्रिदेवों में से प्रत्येक में ईश्वरीय होने की विशेषता है। इससे इस निहितार्थ से बचने में मदद मिल सकती है। यह बहुत ही समस्याग्रस्त होगा कि पिता पुत्र है या पुत्र पवित्र आत्मा है, या पवित्र आत्मा पिता है।

यह सच नहीं है। वे अलग-अलग हैं। फिर भी, वे सभी ईश्वरत्व के भीतर दिव्य व्यक्ति हैं।

आपको यह मददगार लग सकता है। ये दिव्य अवतार और त्रिदेव से संबंधित कुछ दार्शनिक मुद्दे हैं।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 16 है, दिव्य अवतार और त्रिदेव।